दैनिक नव दुनिया, भोपाल

29 SEP 2012

नरेन्द्र मोदी पर भारी शिवराज सिंह

रामनारायण श्रीवास्तव >>सूरजकुंड

गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी पर मप्र के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान भारी पड़े हैं। राष्ट्रीय कार्यकारिणी व राष्ट्रीय परिषद की बैठक में तीनों दिन मप्र सरकार व संगठन की गूंज होती रही। आखिरी दिन तो आडवाणी व गडकरी ने चौहान को विकास पुरुष करार देते हुए उनका सम्मान किया। इस दौरान मंच पर बैठे पार्टी के अन्य मुख्यमंत्री मायूस भी दिखे, लेकिन सबसे ज्यादा आहत हुए नरेंद्र मोदी।

राष्ट्रीय परिषद के 1100 प्रतिनिधियों की मौजूदगी में जब शिवराज को विशेष सम्मान से नवाजने की घोषणा हो रही थी, उसी समय श्री मोदी मंच से उतर कर पीछे बने वीवीआईपी कक्ष में प्रवेश कर रहे थे। >>शेष पेज 9 पर

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का सम्मान करते वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी।

संघ के आगे झुकी भाजपा

भारतीय जनता पार्टी ने अपने संविधान में संशोधन करते हुए पार्टी अध्यक्ष, राज्य व जिला इकाइयों के प्रमुखों को दूसरे कार्यकाल की पात्रता दे दी है। इसके बाद मौजूदा अध्यक्ष नितिन गडकरी को दूसरा कार्यकाल देने का रास्ता साफ हो गया। भाजपा ने यह कदम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इच्छा को मानते हुए उठाया है। वरिष्ठ भाजपा नेता राजनाथ सिंह ने पार्टी संविधान के अनुच्छेद 21 में संशोधन का प्रस्ताव रखा, जिसका अनुमोदन एम. वैंकेया नायडू ने किया। >>शेष पेज 9 पर

नरेन्द्र मोदी...

श्री आडवाणी ने शॉल व प्रशस्ति पत्र से चौहान को सम्मानित किया। भाजपा में यह पहला मौका था जब पार्टी के किसी मंच पर मोदी से ज्यादा शासन वाले किसी और राज्य के मुख्यमंत्री को इतना मान मिला हो। गौरतलब है कि एक साल पहले दिल्ली में हुई पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक से मोदी दूर रहे थे। इसके बाद मुंबई में हुई बैठक में वह गए तो लेकिन अपने विरोधी माने जाने वाले संजय जोशी को कार्यकारिणी से बाहर कराने के बाद। अब सूरजकुंड में मोदी बैठक में तो रहे, लेकिन पार्टी में उनका आभामंडल कम होता दिखा। उनकी जगह पार्टी ने बेहतर सरकार चला रहे मप्र के मुख्यमंत्री श्री चौहान को आगे बढ़ाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। राष्ट्रीय परिषद ने कृषि विकास दर हासिल करने में कीर्तिमान बनाने व मप्र को देश का दूसरा सबसे बड़ा गेहूं उत्पादक राज्य बनाने के लिए विशेष सम्मान कर बाकी मुख्यमंत्रियों को संदेश भी दिया। लालकृष्ण आडवाणी ने मप्र की मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन समेत कई योजनाओं का भी उल्लेख किया। डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने भी श्री चौहान की प्रशंसा करने में कोई कमी नहीं रखी। उन्होंने कहा कि कोयला ब्लाक आवंटन में मप्र ने जो पारदर्शी नीति अपनाई अगर केंद्र सरकार उसे ही अपना लेती तो इतना बड़ा घोटाला नहीं होता। डॉ. जोशी इस घोटाले की जांच कर रही संसद की लोकलेखा समिति के अध्यक्ष भी है।

संघ के...

इसके बाद पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित कर दिया। हालांकि नायडू ने यह स्पष्ट किया कि यह प्रावधान दूसरे कार्यकाल की पात्रता प्रदान करता है, परंतु किसी भी मौजूदा अध्यक्ष को स्वतः दूसरा कार्यकाल प्रदान नहीं करता। अगर किसी चुनाव क्षेत्र, मंडल, जिला, राज्य या केन्द्र की पार्टी इकाई के मतदाता यह समझते हैं कि मौजूदा अध्यक्ष को दूसरा कार्यकाल देने का उचित कारण है, तो वे उक्त व्यक्ति को दुबारा चुन सकते हैं। इससे पहले मई में मुंबई में पार्टी कार्यकारिणी की बैठक में संशोधन प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसमें कहा गया था कि कोई भी योग्य व सक्रिय उम्मीदवार अध्यक्ष पद पर तीन-तीन साल के दो कार्यकाल तक रह सकता है।

गडकरी का रास्ता साफ: पार्टी के संविधान में संशोधन के साथ ही भाजपा के मौजूदा अध्यक्ष नितिन गडकरी के दोबारा अध्यक्ष बनने का रास्ता साफ हो गया है। गडकरी का पहला कार्यकाल दिसंबर माह में समाप्त हो रहा है। गडकरी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का समर्थन है। बताया जाता है कि वर्ष 2009 में लगातार दूसरे लोकसभा चुनावों में हार के बाद गडकरी के कार्यकाल में पार्टी की कार्यपद्धति व संभावनाओं में उल्लेखनीय मजबूती आई है, जिसकी वजह से संघ को उनसे उम्मीदें नजर आ रही हैं।

31 अक्टूबर तक चुनाव: उधर गडकरी ने भी पार्टी कैडर को स्पष्ट संकेत दे दिया है कि जिला व राज्य इकाइयों के चुनाव 31 अक्टूबर से पहले करवा लिए जाएं। गडकरी चाहते हैं कि गुजरात में विधानसभा चुनावों के पहले वे दुबारा पार्टी के अध्यक्ष बन जाएं। कइयों का यह भी मानना है कि गुजरात विधानसभा चुनावों की प्रक्रिया पूरी होने के बाद नरेन्द्र मोदी राष्ट्रीय मंच पर पदार्पण करने की कोशिश कर सकते हैं। गडकरी का दूसरा कार्यकाल जनवरी 2013 से शुरू होकर दिसंबर 2015 तक रहेगा। इसका अर्थ है कि वर्ष 2014 में होने वाला लोकसभा चुनाव उनके नेतृत्व में ही लड़ा जाएगा। उनके नेतृत्व में पार्टी ने गोआ, बिहार व पंजाब के विधानसभा चुनावों में बेहतर प्रदर्शन किया है। हालांकि पार्टी उत्तर प्रदेश में मतदाताओं को लुभाने में असफल रही तथा उत्तराखंड में भी सत्ता से हाथ धोना पड़ा।